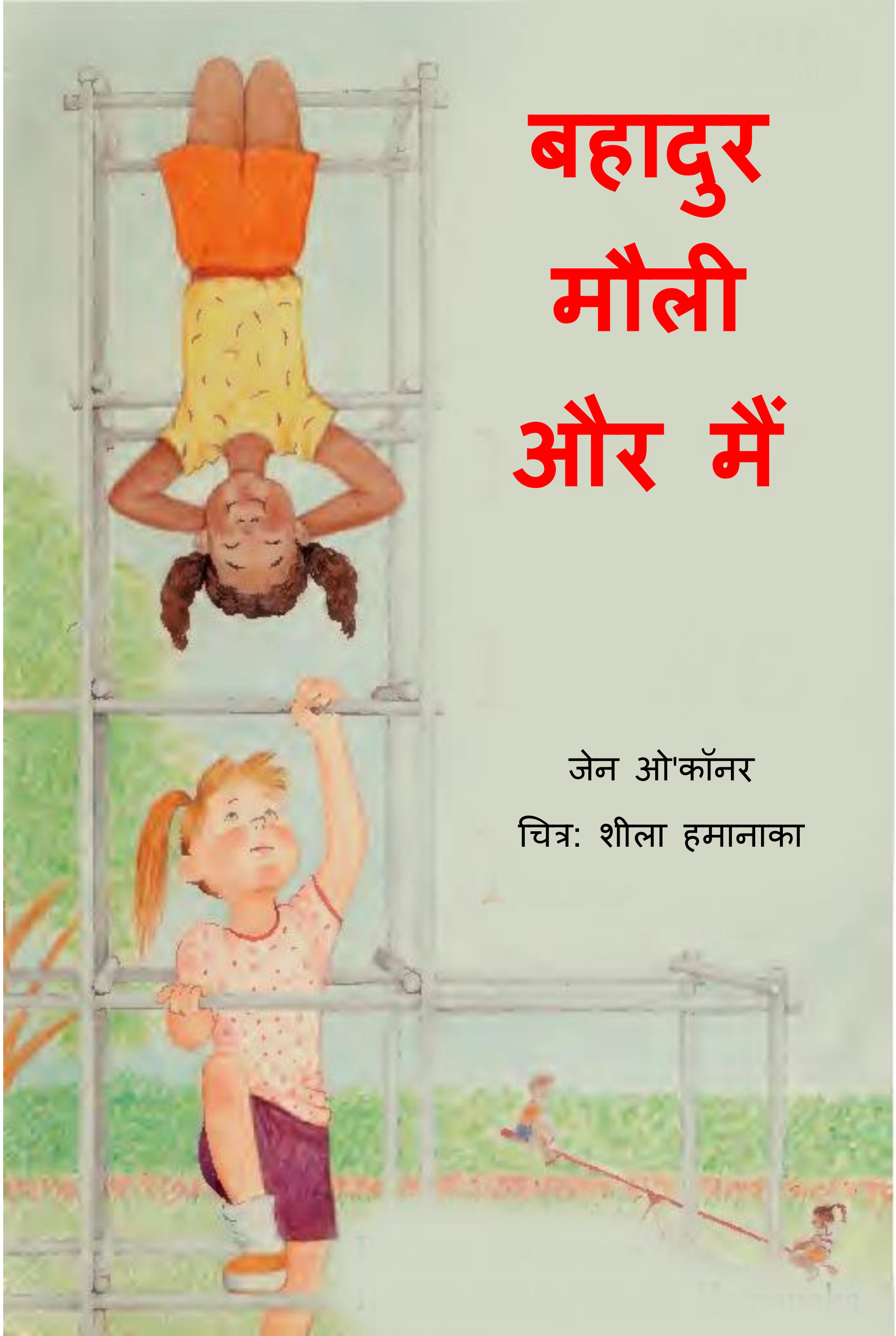
बहादुर मौली और मैं

जेन ओ'कॉनर

चित्र: शीला हमानाका



बहादुर मौली और मैं

जेन ओ'कॉनर

चित्र: शीला हमानाका



मौली बड़ी बहादुर है.
दूसरी कक्षा के किसी भी
बच्चे की तुलना में
उसमें ज़्यादा हिम्मत है.
मौली एक पैर पर
झाड़-बंदर की सलाखों के ऊपर
खड़ी हो सकती है.





जब निकी उसकी मेज़ में
मरे हुए पानी के कीड़े छिपाती है,
तो भी वो बिल्कुल नहीं डरती है.



और जब बड़े बच्चे उसे चिढ़ाते हैं,
तो मौली उन्हें डांटकर
वहाँ से चले जाने को कहती है.



मौली सचमुच में बहुत बहादुर है.
काश मैं भी उसकी तरह होती.

आज लंच लाइन में मौली ने मुझसे कहा.

"बेथ, क्या तुम इस हफ्ते के अंत में

हमारे गांव वाले घर में मेरे साथ आओगी?

वहाँ तुम्हें बहुत मज़ा आएगा."

वाह!

मुझे लगता है मौली मुझे

सचमुच पसंद करती है.

वो सोचकर मुझे बहुत अच्छा लगा.



लेकिन मैं पहले अपने घर से कभी भी दूर नहीं रही.
अगर वहां मुझे घर की याद आई तो?
अगर मुझे वहां का खाना पसंद नहीं आया, तो?



अगर वहाँ बहुत सारे जंगली जानवर हुए, तो?
मैं पक्की तौर पर नहीं कह सकती थी
कि मैं वहां पर जाना चाहूंगी.





मैं मौली के साथ एक मेज़ पर बैठी.

मैंने उससे कहा,

"वाह, मौली, तुम्हारा निमंत्रण अच्छा है.

लेकिन मुझे पता नहीं

कि मेरे माता-पिता हाँ कहेंगे या न."

उस रात

मौली की माँ ने मेरी माँ को फ़ोन किया.

मेरी माँ ने हाँ कह दिया.

फिर मैं कैसे मना कर सकती थी?

सबकुछ तय हो गया.

अब मौली के माता-पिता मुझे

शनिवार सुबह लेने आएंगे.



शुक्रवार की रात मैंने अपना सामान पैक किया.
बाद में मेरी माँ ने मुझे बिस्तर पर लिटा दिया.
"मुझे डर है कि मुझे आपकी याद आएगी,"
मैंने कहा.
"मुझे यकीन है कि मैं हर समय रोती रहूँगी.
तब मौली सोचेगी कि मैं एक डरपोक बच्ची हूँ.
फिर वो मुझे पसंद नहीं करेगी."
मेरी माँ ने मुझे गले लगाया.
"वहां तुम्हें बहुत मज़ा आएगा.
और अगर कुछ हुआ, तो मौली समझ जाएगी
कि तुम्हें घर की थोड़ी याद आ रही है."
फिर मेरी माँ ने मुझे दो बार चूमा.
"एक चुंबन आज रात के लिए
दूसरा, कल की रात के लिए
जब तुम मौली के घर पर होगी."





मौली के माता-पिता
अगले दिन सुबह जल्दी आए.
मैं डरी हुई थी.
लेकिन मैं उत्साहित भी थी.





सबसे बड़ी बात यह थी कि
मैं मौली के सामने अपना
डर नहीं दिखना चाहती थी.
इसलिए मैंने अपने माता-पिता से अलविदा कहा
और फिर पीछे की सीट पर बैठ गई.



मौली का कुत्ता हमारे बीच बैठ गया.

"यह बुच है," मौली ने कहा.

तुरंत बुच ने मुझे चाटना शुरू कर दिया.

मुझे बड़े कुत्तों से बहुत डर लगता है.

लेकिन क्या मैंने अपना डर ज़ाहिर किया?

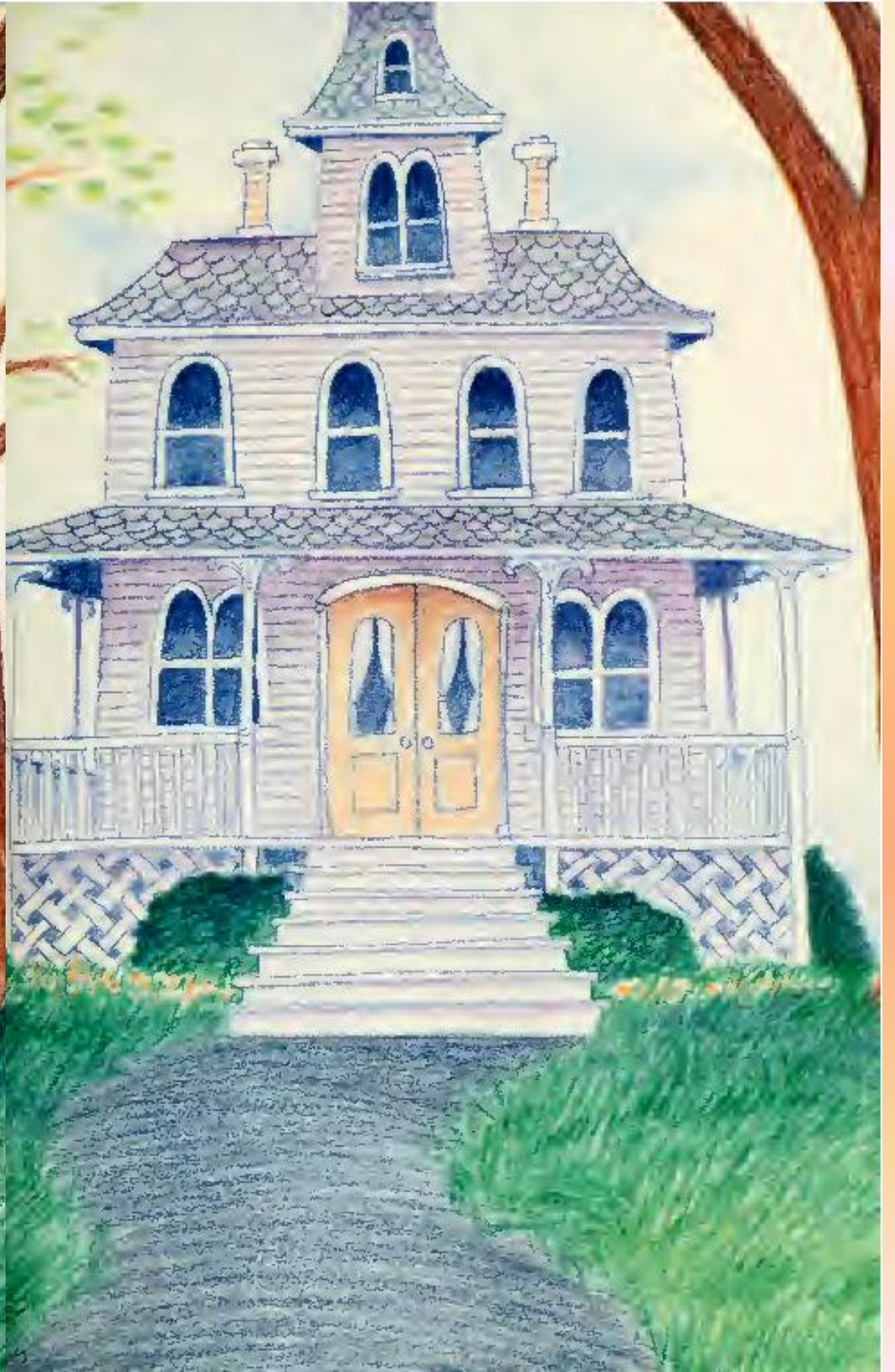
बिल्कुल नहीं!

मैंने ऐसे अभिनय किया

जैसे मुझे कुत्ते का चाटना

बहुत अच्छा लगता है!

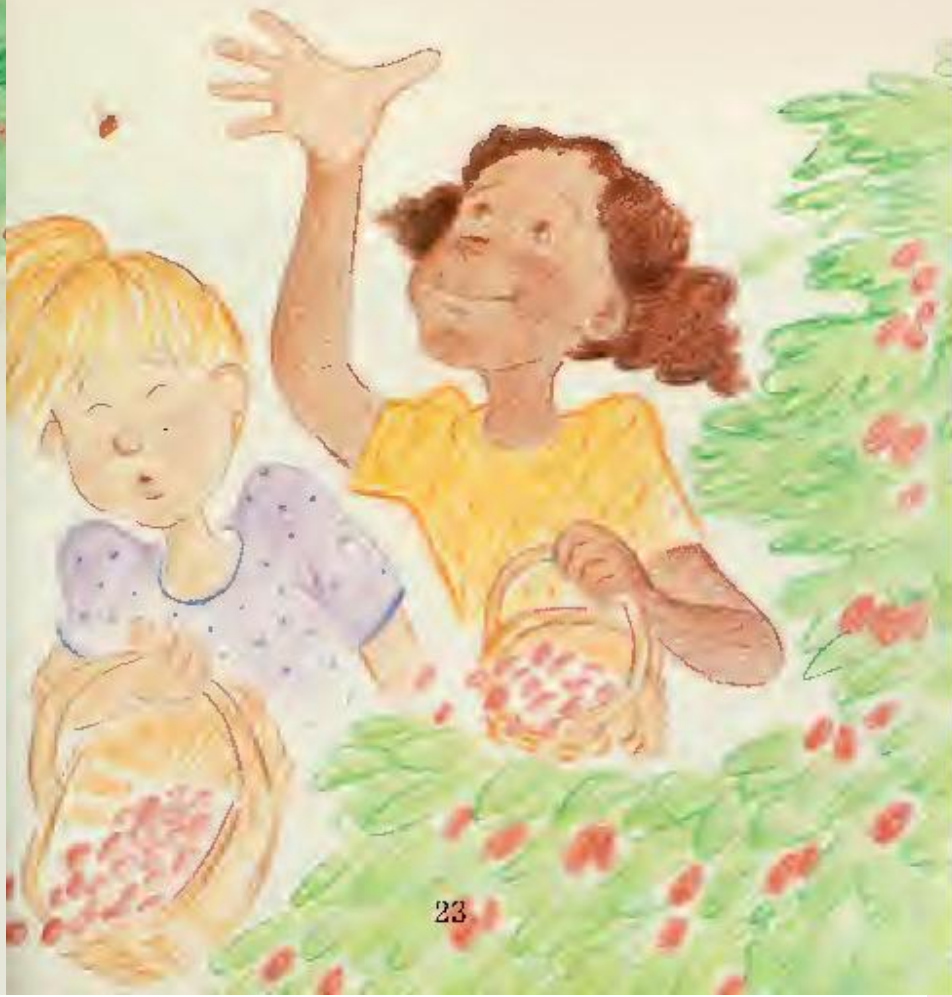
दोपहर तक हम मौली
के गांव पहुँचे.
उनका घर
एक पहाड़ी की चोटी पर
बिल्कुल अकेला खड़ा था.
"यहां पहले कभी एक खेत था,"
मौली की माँ ने मुझे बताया.
"यह घर 150 साल पुराना है."
मुझे नए घर पसंद हैं.
मुझे भूत-प्रेत पसंद नहीं हैं.
लेकिन मैंने यह बात
मौली की माँ से नहीं कही.





दोपहर के भोजन के ठीक बाद
हम बेर तोड़ने चले गए.
बेर तोड़ना सुनने में मज़ेदार लगे
लेकिन फिर मैंने झाड़ियों पर
बहुत सारे कीड़े-मकौड़े देखे.

मैं उन्हें छूना नहीं चाहता थी.
लेकिन मौली ने उन्हें भगा दिया.
फिर मैंने भी कुछ कोशिश की.
"अरे! यह तो बड़ा मज़ेदार है," मैंने कहा.
"मैंने पहले कभी इस तरह बेर नहीं तोड़े थे."



हमने ढेर सारे बेर खाए.
उनका लाल रस मेरे चेहरे
और हाथों पर लग गया.
मैंने उसके खून होने का नाटक किया
मैंने कहा मैं एक पिशाच हूँ.



मैंने मौली का चारों ओर पीछा किया.
"जानती हो क्या?" मैंने उससे कहा.
"मुझे बहुत खुशी है कि
मैं तुम्हारे साथ गांव आई."



बाद में हम जंगली फूलों की तलाश की.

वो काम मुझे अच्छा और सुरक्षित लगा.

पहले हम एक नाले तक गए.

नाले के उस पार जाने के लिए एक लट्ठा पड़ा था.



मौली सीधे उस लट्ठे के पार भाग गई.

यार, मौली में कितनी हिम्मत है!

बुच भी उस पार भाग गया.

मैंने लट्ठे को घूरा.

"क्या इस तरफ कोई जंगली

फूल नहीं हैं?" मैंने पूछा.

मौली ने अपना सिर हिलाया,

"सबसे अच्छे फूल कुछ आगे हैं,

चलो, बेथ. बिल्कुल मत डरो.

बस लट्ठे को पार करो

वो काम बहुत आसान है."





"ठीक है," मैंने खुद से कहा.

"मुझे कायरता से पेश आना बंद करना होगा."

फिर मैं छोटे-छोटे कदम रखकर

लट्ठे पर चलने लगी.

आखिर में मैं फिसल गई.

उफ़! मैं नीचे गिर गई.

"क्या तुम ठीक हो?" मौली ने पूछा.

मैंने सिर हिलाया.

लेकिन मेरी पीठ में बहुत दर्द हो रहा था.





हमने थोड़ी देर फूल तोड़े.

और जब हम वापिसी के लिए निकले.

इस बार मैं लट्ठे पर रेंगती हुई गई.

लेकिन मौली ने मुझे चिढ़ाया नहीं.

मुझे पता था कि मैं बेवकूफ़ लग रही थी.



घर वापस जाते समय

बुच ने एक खरगोश देखा.

उसने उसे मक्के के खेत में खदेड़ा.

"बेवकूफ़ कुत्ता!" मौली ने कहा.

"वह उस खरगोश को कभी नहीं पकड़ पाएगा.

हमें बुच को ढूँढ़ने जाना चाहिए."



"अरे बाप रे!" मैंने सोचा.

लेकिन मैं मौली के पीछे-पीछे अंदर गई.

हम बुच के भौंकने की आवाज़

के पीछे-पीछे चले.

हे भगवान, वो खेत कितना बड़ा था!

भुट्टे हम से बहुत ऊंचे थे.

ऐसा लग रहा था

जैसे वो खेत मीलों तक फैला था.



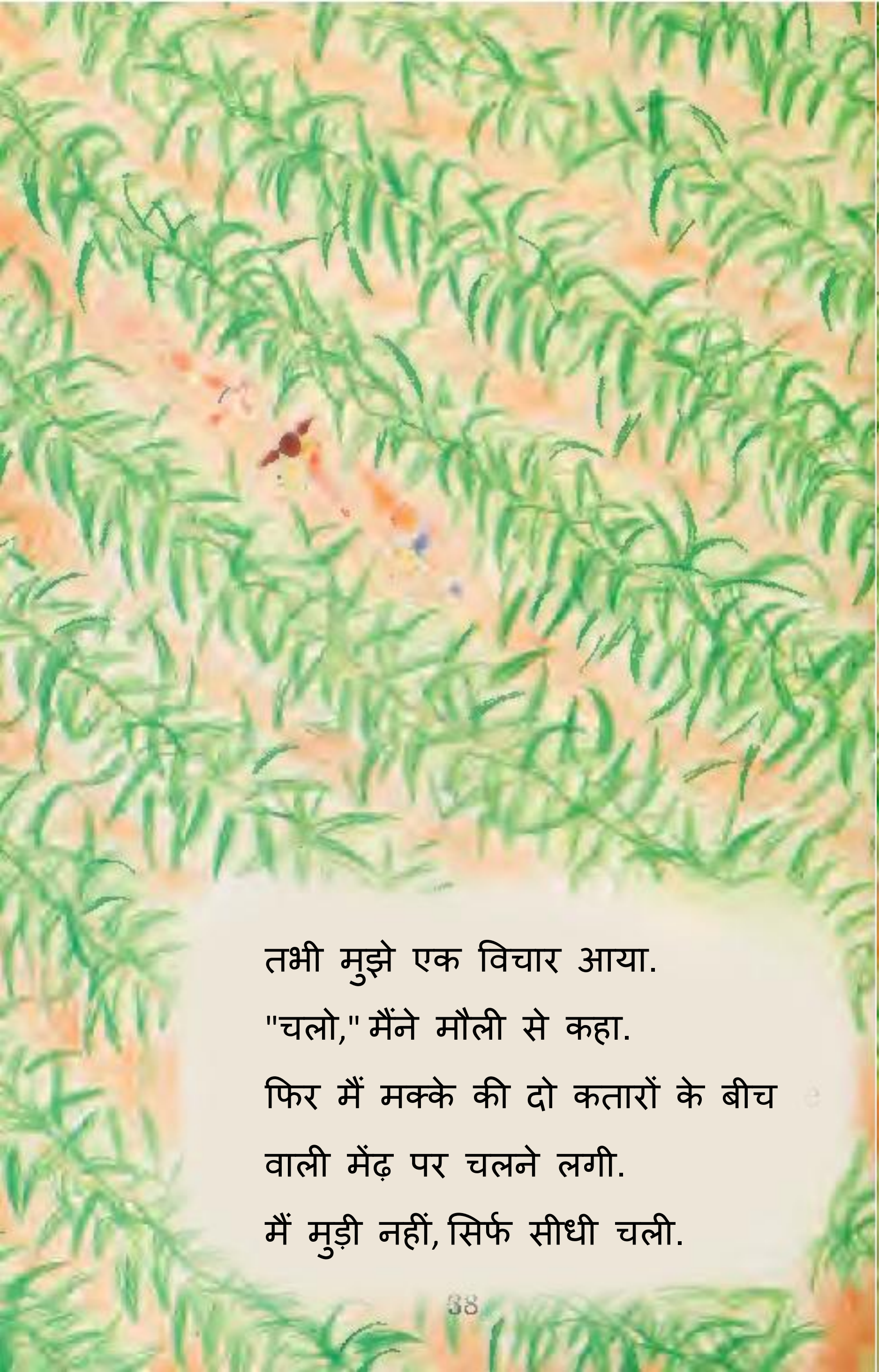
आखिरकार हमें बुच दिखाई दिया.
मौली ने दौड़कर उसे गले लगाया.
फिर उसने मेरा हाथ पकड़कर खींचा.
"यह जगह बहुत डरावनी है,"
मौली ने कहा.
"चलो यहाँ से किसी तरह बाहर निकलते हैं."



लेकिन मुझे वहां कोई डर नहीं लगा!
वहां से बाहर निकलना आसान नहीं था.
सभी तरफ मक्के के पौधे एक-जैसे दिख रहे थे.
बहुत गर्मी थी और वहां देखना मुश्किल था.
कीड़े हमारे चेहरे पर चारों ओर उड़ रहे थे.
ऐसा लग रहा था जैसे हम
लगातार गोल-गोल घूम रहे हों.

"क्या बुच रास्ता ढूँढ़ने में हमारी
मदद नहीं कर सकता?" मैंने पूछा.
मौली ने "न" में अपना सिर हिलाया.
"बुच अपना कुत्ता-घर तक ढूँढ़ नहीं पाता है."
फिर मौली ज़ोर-ज़ोर से पलकें झपकाने लगी.
और उसकी नाक बहने लगी.
"बेथ," उसने कहा,
"हम सचमुच यहाँ फँस गए हैं.
मुझे बहुत डर लग रहा है."
क्या बहादुर मौली डर गई थी?
मुझे यकीन नहीं हो रहा था!
फिर मैंने उसका हाथ पकड़ा.
"डरो मत," मैंने उससे कहा.
हालाँकि मैं भी डरी हुई थी.
"हम यहाँ से निकल जाएँगे."



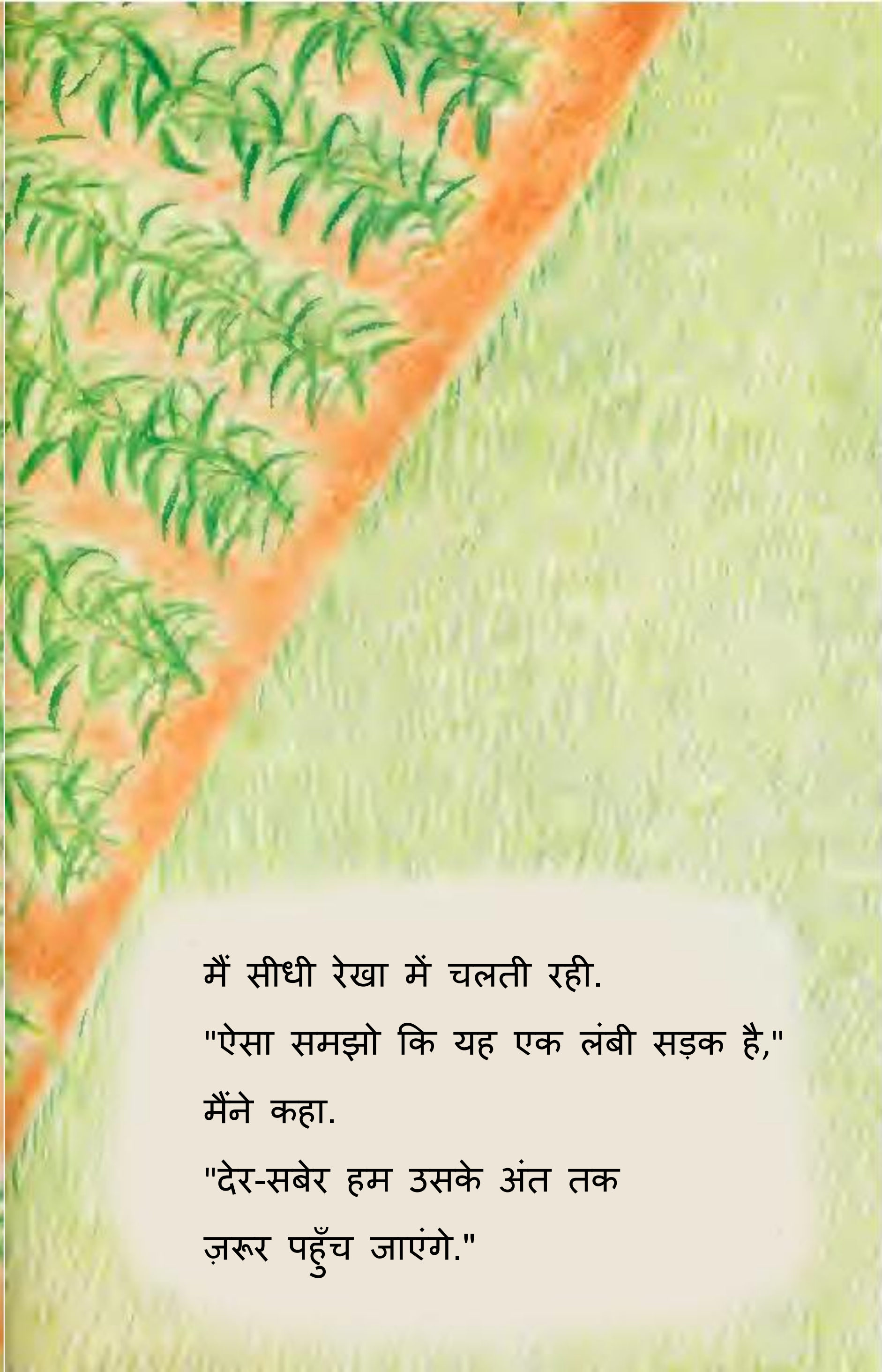


तभी मुझे एक विचार आया.

"चलो," मैंने मौली से कहा.

फिर मैं मक्के की दो कतारों के बीच वाली मेंढ़ पर चलने लगी.

मैं मुड़ी नहीं, सिर्फ सीधी चली.



मैं सीधी रेखा में चलती रही.

"ऐसा समझो कि यह एक लंबी सड़क है," मैंने कहा.

"देर-सबेर हम उसके अंत तक ज़रूर पहुँच जाएंगे."

और आखिरकार हम पहुँच ही गए!
मौली और मैंने
एक-दूसरे को गले लगाया.
फिर हम उछल-कूद करने लगे.
वूफ! वूफ! बुच चिल्लाया.
"क्या बात है," मौली ने कहा,
"तुमने हमें बाहर निकाला."





जब हम मौली के घर वापस पहुँचे.
उसकी माँ ने कहा,
"लड़कियों, तुम कहाँ थीं?
रात के खाने का समय हो गया है."
मौली ने माता-पिता को पूरी कहानी सुनाई.
कि कैसे हम बुच के पीछे-पीछे
मक्के के खेत में खो गए थे.
फिर मौली ने मुझे गले लगाया.



"मैं बुरी तरह डर गई थी,"
मौली ने उनसे कहा.
"लेकिन बेथ बिल्कुल नहीं डरी थी!
उसमें क्या हिम्मत है!"
हिम्मत? मुझमें?
मुझे अपने कानों पर यकीन नहीं हुआ!

रात का खाना बहुत अच्छा था.
हमने आग पर भुट्टे भूने.





खाने को बहुत सारे भुट्टे थे.
"अरे नहीं! आज हमने
बहुत भुट्टे देखे हैं!"
मौली और मैं एक-साथ चिल्लाए.
लेकिन फिर भी हम दोनों ने
तीन-तीन भुट्टे खाए.



सोने से ठीक पहले
मुझे घर की थोड़ी याद ज़रूर आई.
मौली की माँ ने मुझे ज़ोर से गले लगाया.
उससे मुझे बहुत अच्छा लगा.

फिर मौली ने मुझ से कहा,
कि मैं उसकी सबसे अच्छी दोस्त हूँ.
हमने अपनी अपनी छोटी
उँगलियां आपस में मिलाईं.
उससे भी मदद मिली.





शायद मौली सही थी.

शायद मैं सचमुच में एक बहादुर

हिम्मत वाली बच्ची हूँ!

मौली बहुत बहादुर थी,
लेकिन बेथ खुद को
बहुत डरपोक महसूस करती थी.
बेथ अपनी दोस्त मौली जितनी
बहादुर क्यों नहीं हो सकती?

दूसरी कक्षा के दो लड़कियों की
इस मज़ेदार कहानी में,
बेथ को पता चलता है
कि आखिरकार उसमें भी हिम्मत थी!